मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

निजी धन पर नजर 3
कर्ज, खुदकुशी, रेप 4
'वंशवादी' नेहरू 5
धन को तरसे 8

वर्ष 31 अंक -47 फ़रीदाबाद 11-17 नवम्बर 2018 फोन : - 9999595632 ₹ 2.50

मंत्री विपुल गोयल ने झुग्गियों व पत्रकारों में पेशगी चुनावी रिश्वत (दिवाली) बांटी

फ़रीदाबाद (म.मो.) चुनाव अधिसूचना जारी हो जाने के बाद किसी भी अभ्यर्थी द्वारा किये जाने वाले चुनावी खर्च की निगरानी चुनाव आयोग द्वारा की जाती है। वह बात अलग है कि इस फर्जी निगरानी को धता बताते हुए सक्षम एवं साधन सम्पन्न उम्मीदवार जमकर खर्च करते हैं। स्थानीय विधायक एवं राज्य के उद्योग मंत्री विपुल गोयल ने चुनाव घोषित होने से पहले ही अपने खजाने के मुंह खोल दिये हैं।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार दिवाली से तीन-चार दिन पूर्व विपुल ने अपने चुनाव क्षेत्र फरीदाबाद की तमाम झुग्गी बस्तियों एवं अन्य कमजोर बस्तियों में मिठाई के डिब्बे बंटवाये। प्रत्येक डिब्बे में आधा किलो गुलाब जामुन रखे गये थे। मिठाई बनाने व सप्लाई करने का काम विपुल ने अपने भतीजे को सौंपा जिसकी ओल्ड फरीदाबाद के बाजार में मनीष स्वटीस के नाम से मिठाई की दुकान है। विश्वस्त जानकारी के अनुसार बीस से पच्चीस हजार डिब्बों की सप्लाई की गई है। बाजार भाव से इस मिठाई की कीमत 120 रुपए बनती है, फिर भी न्यूनतम भाव यदि 100 रुपए लगाया जाये तो 20 से 25 लाख की मिठाई तो बंटी ही है। मिठाई खाने वाले उसकी गुणवत्ता की तारीफ करते हुए बताते हैं कि मिठाई तो बीती दो दिवालियों पर भी इसी तरह बांटी गयी थी लेकिन इस बार मिठाई के डिब्बों पर विपुल गोयल व अन्य भाजपा नेताओं का पोस्टर चुनाव चिन्ह कमल के साथ छापा गया था।

विपुल गोयल का यह कारनामा दर्शाता है कि उनके गरीब मतदाताओं को, जो बहुत ही अमानवीय परिस्थितियों में जीवन यापन कर रहे हैं, किस तरह से काबू किया जा सकता है। उनके बच्चों की पढ़ाई के लिये स्कूल व चिकित्सा सेवा के लिये अस्पताल खोलने की कोई जरूरत नहीं। जिन्हें पीने का स्वच्छ पानी व सांस लेने के लिए शुद्ध हवा तक नहीं, बेरोजगारी व महंगाई से जूझते इन गरीबों को फिलहाल मिठाई व चुनाव के दौरान शराब की बोतल से ही काबू किया जा सकता है। अब यह उन मतदाताओं पर निर्भर करता है कि वे अपने मताधिकार को इतने भर में बेच देंगे या अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करेंगे।

गरीब मतदातओं की तरह ही शहर के पत्रकारों पर भी विपुल ने अपना मायाजाल फेंका है। दिवाली से करीब एक सप्ताह पूर्व विपुल ने सैक्टर 10 स्थित गार्डन में पत्रकारों के लिये दिवाली मेले का आयोजन किया। इसमें 300 से अधिक पत्रकार पहुंच गये। यह पता नहीं चल पाया कि इनमें से कितने असली व कितने नकली थे। विपुल 150-200 पत्रकारों के आने का अनुमान लगाकर उपहार ले गये थे लेकिन जब उनकी लाइन लगवाई गयी तो वे 300 के पार थे। लिहाजा 200 को उपहार बांटने के बाद विपुल ने शेष बचे पत्रकारों को अपने नाम व पते नोट कराने को कहा। उन्हें बताया गया कि यथा समय उन्हें उपहार भिजवा दिये जायेंगे अथवा उन्हें पुनः कहीं बुला लिया जायेगा।

इसके बाद दिवाली से दो दिन पहले मंत्री ने मैगपाई पर्यटन स्थल पर पत्रकारों के एक क्लब के सदस्यों के लिये भी अलग से विशेष आयोजन किया। इस आयोजन में शायद वे पत्रकार रहे होंगे जो अपने आप को कुछ अधिक प्रतिष्ठित मानते हैं और दिवाली मेले जैसे आम आयोजन में शामिल होना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। इसमें भी करीब चालीस पत्रकार पहुंचे हुए थे। पत्रकारों की इस संख्या को लेकर खुद पत्रकार ही व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि एक के साथ तीन फ्री। इस क्लब को विपुल गोयल ने ग्यारह लाख रुपए बतौर दिवाली गिफ्ट देने की घोषणा की।

इसके अलावा बल्लभगढ़ में भी दो पत्रकार संघों ने अलग-अलग दिवाली मिलन कराये। एक में स्थानीय विधायक मूलचंद, पृथला विधायक टेकचंद तथा मंत्री विपुल गोयल और दूसरे में मुख्य उपहार दाता तिगांव के कांग्रेसी विधायक ललित नागर थे। ऐसे और कितने व कहां-कहां उपहार बंटे उनकी जानकारी अभी प्राप्त नहीं हो पायी है। वैसे यह काम हरियाणा सरकार के स्तर पर भी किया जाता है। इसके तहत सरकार डीपीआरओ (जिला लोक सम्पर्क अधिकारी) के माध्यम से विशेष पत्रकारों को उपकृत करने का कार्य करती है। ऐसे में समझा जा सकता है कि केन्द्र व अन्य सरकारें भी भला क्यों पीछे रहेंगी, वे भी अपनी श्रद्धा अनुसार पत्रकारों को उपकृत करती हैं।

पत्रकारों की भूमिका वाच-डॉग की

राजनीति शास्त्र में प्रयोग होने वाले वाच डॉग शब्द का अर्थ है (घर का) रखवाला। सत्तारूढ़ दल के कार्यकलापों पर नज़र रखने व उसके जनविरोधी कामों का विरोध करते हुए जनता को जागरूक करना विपक्षी दलों का काम होता है। वह बात अलग है कि सत्तारूढ़ होने पर विपक्षी दल वही सब जनविरोधी काम करने लगता है जिनका वह कल तक विरोध कर रहा था। परन्तु पत्रकार, जब तक वह सही पत्रकार है, कभी सत्तारूढ़ नहीं होता। वह हमेशा विपक्षी दल की भूमिका निभाते हुए वाच-डॉग का कर्त्तव्य निभाता है, वह अपनी कलम के माध्यम से सत्ता के जनविरोधी कुकृत्यों एवं षडयंत्रों का न केवल पर्दाफाश करता है बल्कि वैकल्पिक मार्ग सुझाकर समाज का मार्गदर्शन भी करता है।

पत्रकार को, इस कर्त्तव्य से हटाने अथवा ढिलाई बरतने के उद्देश्य से सत्ताधारी एवं संभावित सत्ताधारी तरह-तरह से उपकृत पत्रकार से अपेक्षा करते हैं कि वह उनकी जनविरोधी करतूतों का पर्दाफाश न करे, उन्हें ढका रहने दे। इतना ही नहीं आज तो सत्ता जनता का ध्यान उनके असली मुद्दों से भटका कर ऐसे वाहियात मुद्दों पर केन्द्रित रखने के लिए मीडिया का इस्तेमाल कर रही है जिससे आम जनता को कतई कोई लाभ होने वाला नहीं। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु सत्ता अरबों रुपए का बजट तो खर्च करती ही है, साथ में उन पत्रकारों को रगड़ा भी लगाती है जो उन्हें रास्ते की बाधा बनते नजर आते हैं।

गवाह का दावा, डीजी वंजारा के कहने पर गुजरात के पूर्व गृह मंत्री हरेन पंड्या की हुई थी हत्या

सोहराबुद्दीन शेख फर्जी मुठभेड़ मामले की सुनवाई के दौरान एक गवाह ने कहा कि पूर्व आईपीएस अधिकारी डीजी वंजारा के कहने पर सोहराबुद्दीन ने हरेन पंड्या की हत्या की थी।

गवाह ने मुंबई में निचली अदालत को बताया कि सोहराबुद्दीन ने गुजरात के पूर्व गृह मंत्री हरेन पंड्या की हत्या की थी. गवाह ने दावा किया कि गुजरात के पूर्व आईपीएस अधिकारी डीजी वंजारा ने पंड्या की हत्या के कथित आदेश दिए थे।

इस गवाह के नाम का खुलासा नहीं किया गया है। साल 2003 में अहमदाबाद में पंड्या की हत्या हुई थी। गवाह ने कहा कि उसने 2002 में सोहराबुद्दीन से मुलाकात की थी और फिर उसकी दोस्ती सोहराबुद्दीन, उसकी पत्नी कौसर बी और उसके सहयोगी तुलसीराम प्रजापति से हो गई थी।

अदालत में गवाह ने कहा, 'उस वक्त सोहराबुद्दीन ने मुझे बताया कि उसे गुजरात के गृह मंत्री हरेन पंड्या की हत्या करने के लिए डीजी वंजारा से पैसे मिले थे और उसने वह काम पूरा किया। फिर मैंने उससे कहा कि उसने जो कुछ किया, वह गलत था और उसने एक अच्छे इंसान की हत्या की थी।'

गवाह ने कहा कि साल 2005 में राजस्थान पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया था और उदयपुर जेल में उसे रखा गया था जहां उसकी मुलाकात प्रजापति से हुई थी। सीबीआई के विशेष जज एसजे शर्मा के समक्ष अपना बयान दर्ज कराते हुए गवाह ने कहा, 'प्रजापति ने मुझसे कहा कि गुजरात पुलिस ने सोहराबुद्दीन और उसकी पत्नी कौसर बी की हत्या की'।

इस मामले में गवाही अभी जारी रहेगी। गुजरात पुलिस के साथ साल 2005 में एक कथित फर्जी मुठभेड़ में सोहराबुद्दीन और उसकी पत्नी मारी गई थी।

बाद में गुजरात और राजस्थान पुलिस के साथ एक अन्य कथित फर्जी मुठभेड़ में प्रजापति भी मारा गया था। इन दोनों कथित फर्जी मुठभेड़ों के लिए सीबीआई द्वारा आरोपी बनाए गए कुल 38 लोगों में से 16 को निचली अदालत आरोपमुक्त कर चुकी है।

आरोपमुक्त होने वालों में भाजपा अध्यक्ष अमित शाह, डीजी वंजारा और गुजरात एवं राजस्थान पुलिस के कुछ वरिष्ठ अधिकारी शामिल हैं।

पुलिस को न मिली दिवाली की मिठाई, बदले में हो गयी पिटाई

फ़रीदाबाद (म.मो.) दिनांक 6-7 की मध्य रात्रि करीब साढे बारह बजे एनएच-4-5 की विभाजक सड़क (केसी रोड) पर विकास की जनरल स्टोर की दुकान सजी थी। दिवाली के चलते सभी दुकानदारों ने अपनी-अपनी दुकानें सड़क की ओर बढ़ा रखी थी। यह कोई नई बात नहीं है। हर त्यौहार पर लगभग सभी दुकानदार अपनी दुकानों को आगे बढ़ा लेते हैँ। इससे नगर निगम बाकायदा विशेष तहबाज़ारी भी वसूलता है। यह प्रथा बहुत समय से हर शहर में चलती आ रही है।

इसके बावजूद थाना एनआईटी की पीसीआर में सवार नशे में धुत्त दो पुलिसकर्मी विकास की दुकान पर पहुंच गये और उसे धमकाने लगे कि इतनी देर तक दुकान क्यों खुली हुई है, इसे तुरन्त बंद करो। दुकानदार ने पलट कर जवाब दिया कि जब बाकी सब दुकानें खुली हैं तो उसके पीछे क्यों पड़े हो? मामूली कहासुनी पहले गर्मा गर्मी में और फिर मारपीट में बदल गयी। इस पर एएसआई प्रदीप ने अपनी रिवाल्वर निकालकर विकास पर तान दी। इससे मामला और भड़क गया। विकास के अन्य भाई व बिरादरी वाले भी आ गये और पुलिस वालों की जमकर पिटाई कर दी। दुकान वाले उन पर भारी पड़े तो पुलिस वाले जिप्सी छोड़कर भाग खड़े हुए। गुस्साये लोगों ने जिप्सी के शीशे आदि तोड़ दिये।

कुछ देर बार थाने से, जो घटनास्थल से मात्र आधा पौना किलोमीटर स्थित है, एक सब इन्सपैक्टर व सिपाही एसएचओ की गाड़ी लेकर आये तो उन्होंने देखा कि दुकान के सामने खड़ी जिप्सी के बोनट पर किसी के जन्मदिन का केक काटा जा रहा था। लोगों की संख्या भी काफी बढ़ चुकी थी। ऐसे में जब नई पुलिस टीम पर भीड़ भारी पड़ने लगी और एसएचओ की गाड़ी की भी टूटने की नौबत आ गयी तो थाना कोतवाली व एसजीएम नगर से भी अतिरिक्त पुलिस बल मांगा गया। बड़ी मुश्किल से पुलिस ने एक लडके को काबू करके अपनी गाडी में डाल तो लिया लेकिन पब्लिक ने गाड़ी को चलने ही तो नहीं दिया। तिबारा हालात खराब होते देख कर पकड़े हुए लड़के को वापस उतारकर व दुम दबाकर भाग जाने में ही पुलिस ने अपनी भलाई समझी।

कुछ प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि मौके पर एनआईटी के एसीपी भी पहुंचे थे और उनकी मौजदूगी में यह समझौता हुआ कि न तो पुलिस इस मामले में कोई लिखत-पढ़त करेगी और न ही पब्लिक कोई दरखास्तबाजी करेगी। लिहाजा मामला वहीं निपट गया। पुलिस ने अपनी टूटी गाडियों की मरम्मत खुद ही करा ली।

इस बाबत एसीपी से जब फोन करके पूछा गया तो उन्होंने उल्टे सवाल करके पूछा कि कब और कहां झगड़ा हुआ? उन्हें दोबारा सब कुछ बताया गया तो उनका कहना था कि एसएचओ गया होगा,

शेष पेज दो पर